पाठ 36

1. जब मूसा सीनै पर्वत पर परमेश्वर से बातें कर रहा था, तब इस्राएली पर्वत की तलहटी में क्या कर रहे थे?

-इस्राएलियों ने सोने से एक बछड़ा बनाया था, और वे उसे दण्डवत करते थे।

2. क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएली सोने के बछड़े की पूजा कर रहे थे?

-हां।

3. क्या परमेश्वर इस्राएलियों से क्रोधित था?

-हां।

-परमेश्वर इस्राएलियों से इतना क्रोधित हुआ कि वह उन्हें नष्ट करना चाहता था।

4. परमेश्वर ने सभी इस्राएलियों का नाश क्यों नहीं किया?

-क्योंकि मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि उन्हें नष्ट न करें।

5. जब मूसा सीनै पर्वत की तलहटी में पहुंचा तो उसने क्या किया?

-मूसा इस्त्राएलियों पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने परमेश्वर की आज्ञाओं की पत्यर की दोनों पटियाओं को नीचे गिराकर तोड़ डाला।

6. क्योंकि मूसा ने पत्थर की उन दो पटियाओं को तोड़ दिया जिन पर परमेश्वर ने दस आज्ञाएं लिखी थीं, परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि दो नई तख्तियां तराशें, और उन्हें उस पहाड़ पर ले जाएं जहां परमेश्वर ने एक बार फिर अपनी दस आज्ञाएं लिखीं।

7. यदि इस्राएलियों ने तम्बू को ठीक वैसे ही न बनाया होता जैसा परमेश्वर ने उनसे कहा था, तो क्या परमेश्वर का तेज उस तम्बू में प्रवेश करता?

-नहीं।

8. क्या इस्राएली अपने तरीके से परमेश्वर के पास जाने में सक्षम थे?

-नहीं।

9. इस्राएलियों के पास परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र तरीका क्या था?

-परमेश्वर का तरीक़ा।

10. हम परमेश्वर के मार्ग को कैसे जान सकते हैं?

-परमेश्वर की किताब, बाइबिल के माध्यम से।

- परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों को मिस्र और दासता से बाहर निकालने के लिए चुना।

-मूसा भी परमेश्वर का दूत था।

-जब परमेश्वर इस्राएलियों से बात करना चाहता था, तो वह मूसा से बात करता था जो इस्राएलियों से बात करता था।

-परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों से यह कहने के लिए निर्देशित किया कि परमेश्वर उससे क्या कहना चाहता है।

-परमेश्वर ने मूसा को यह लिखने के लिए भी निर्देशित किया कि परमेश्वर क्या करें

उसे लिखना चाहता था।

-परमेश्वर की किताब, बाइबिल में पहली पांच किताबें किसने लिखीं?

-मूसा।

-मूसा को कैसे पता चला कि क्या लिखना है?

-परमेश्वर ने मूसा को वह लिखने के लिए निर्देशित किया जो परमेश्वर चाहता था कि वह लिखे।

-इस्राएली मिस्र से निकल गए थे, और मरुभूमि से होकर यात्रा कर रहे थे।

-जब इस्राएली मरुभूमि से होकर यात्रा कर रहे थे, तो उन्हें मार्ग कैसे पता चला?

-परमेश्वर ने उनका मार्गदर्शन किया।

आइए पढ़ें निर्गमन 40:36-38

36-इस्राएलियों की सारी यात्रा में जब कभी बादल निवास के ऊपर से उठा, तब वे कूच करते थे;

37-परन्तु यदि बादल न उठा, तो वे उस दिन तक न चले, जब तक वह न उठा।

38 इसलिथे यहोवा का बादल दिन को निवास के ऊपर बना रहता या, और इस्राएल के सारे घराने के सब यात्रा के समय उसके साम्हने आग रात को बादल में रहती या।

-जब परमेश्वर चाहता था कि इस्राएली रुकें, तो परमेश्वर बादल को रोक देगा।

-जब परमेश्वर चाहता था कि इस्राएली चले जाएं, तो परमेश्वर बादल को दूर कर देगा।

-जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपनी दस आज्ञाएं दीं, और इस्राएलियों ने परमेश्वर के लिए तम्बू बनाया, तब परमेश्वर ने बादल को ऊपर उठाया।

-परमेश्वर इस्राएलियों को कहाँ ले जा रहा था?

-परमेश्वर इस्राएलियों को कनान तक ले जा रहा था, जिस भूमि का उसने उनके पूर्वज इब्राहीम से वादा किया था।

-इस्राएली बादल के पीछे हो लिए, और परमेश्वर उन्हें कनान देश के सिवाने तक ले गया।

-जब इस्राएली कनान की सीमा पर पहुंचे, तो परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

आइए पढ़ें गिनती 13:1-2

1- यहोवा ने मूसा से कहा,

2- “कनान देश का पता लगाने के लिए कुछ लोगों को भेजो, जो मैं इस्राएलियों को दे रहा हूँ। हर एक पितरों के गोत्र में से अपना एक प्रधान भेजो।”

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह बारह गोत्रों में से प्रत्येक में से एक व्यक्ति को चुने और भूमि का पता लगाए।

-मूसा ने परमेश्वर की बात मानी, और बारह लोगों को कनान देश का पता लगाने के लिए भेजा।

आइए पढ़ें गिनती 13:3

3-तब मूसा ने यहोवा की आज्ञा पाकर उन्हें पारान के जंगल से बाहर भेज दिया। वे सब इस्राएलियों के प्रधान थे।

-इससे पहले कि मूसा ने बारह आदमियों को कनान देश का पता लगाने के लिए भेजा, उसने उनसे क्या कहा?

आइए पढ़ें गिनती 13:17-21

17 जब मूसा ने उन्हें कनान का पता लगाने के लिए भेजा, तो उसने कहा, 'नेगेव से होकर पहाड़ी देश में जाओ।

18-देखो, देश कैसा है, और जो लोग वहां रहते हैं, वे बलवान हैं या निर्बल, थोड़े हैं या बहुत हैं।

19-वे किस तरह की भूमि में रहते हैं? क्या यह अच्छा है या बुरा? वे किस तरह के शहरों में रहते हैं? क्या वे दीवार रहित या दृढ़ हैं?

20-मिट्टी कैसी है? उपजाऊ है या गरीब? उस पर पेड़ हैं या नहीं? देश की उपज में से कुछ वापस लाने का भरसक प्रयत्न करो।"

21 तब उन्होंने चढ़ाई की, और सीन नाम जंगल से लेबो हमात की ओर रहोब तक देश का भेद लिया।

-चालीस दिनों के अंत में, बारह पुरुष कनान देश की खोज से लौटे।

-बारह पुरूषों ने कनान देश के विषय में मूसा और इस्राएलियोंसे यही कहा।

आइए पढ़ें गिनती 13:27-29

27-उन्होंने मूसा को यह लेखा दिया, कि जिस देश में तू ने हमें भेजा है उस में हम गए, और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं! यहाँ उसका फल है।

28 परन्तु जो लोग वहां रहते हैं वे शक्तिशाली हैं, और नगर गढ़वाले और बहुत बड़े हैं। हमने वहाँ अनाक के वंशजों को भी देखा।

29 अमालेकी दक्खिन देश में रहते हैं; पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी और एमोरी लोग रहते हैं; और कनानी लोग समुद्र के पास और यरदन के किनारे रहते हैं।"

-कनान देश दूध और शहद का देश था।

-यह भी बड़े और शक्तिशाली लोगों से भरी भूमि थी।

-कनान के शहर भी मजबूत थे, और ऊंची दीवारों ने शहरों को घेर लिया था।

-कनान देश का पता लगाने के लिए गए बारह लोगों में से दस लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया।

-उन दस आदमियों ने जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे, इस्राएलियों से क्या कहा?

आइए पढ़ें गिनती 13:31-33

31 परन्तु जो लोग उसके साथ गए थे, उन्होंने कहा, हम उन लोगों पर आक्रमण नहीं कर सकते; वे हमसे ज्यादा मजबूत हैं।"

32 और उन्होंने इस्त्राएलियोंके बीच उस देश के विषय में बुरा समाचार फैलाया जिसे उन्होंने खोज लिया था। उन्होंने कहा, "जिस देश की हमने खोज की, उसमें रहने वाले खा जाते हैं। हमने वहां जितने भी लोगों को देखा, वे सभी बड़े आकार के हैं।

33-हमने वहां नपीली लोगों को देखा। हम अपनी ही नज़र में टिड्डे की तरह लगते थे, और हम उन्हें वैसे ही देखते थे।"

-दस आदमी जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे, वे कनान में प्रवेश क्यों नहीं करना चाहते थे?

-दस आदमी कनान में रहने वाले बड़े और शक्तिशाली लोगों से डरते थे।

-दस लोगों को विश्वास नहीं था कि कनान के लोगों को हराने के लिए परमेश्वर पर्याप्त शक्तिशाली थे।

-दस लोगों ने इस्राएलियों को कनान देश देने के परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं किया।

-दस आदमियों ने इस्राएलियों से कहा कि वे कनान में प्रवेश न करें।

-बारह आदमियों में से दो आदमी थे जो परमेश्वर में विश्वास करते थे।

-उनके नाम कालेब और यहोशू थे।

कालेब और यहोशू ने इस्राएलियों से क्या कहा?

आइए पढ़ते हैं अंक 13:30

30 तब कालेब ने मूसा के साम्हने प्रजा को चुप कराया, और कहा, हम को चढ़कर उस देश पर अधिकार करना चाहिए, क्योंकि हम निश्चय कर सकते हैं।

-कालेब और यहोशू कनान में क्यों प्रवेश करना चाहते थे?

-कालेब और यहोशू कनान में रहने वाले बड़े और शक्तिशाली लोगों से नहीं डरते थे।

-कालेब और यहोशू का मानना था कि कनान के लोगों को हराने के लिए परमेश्वर काफी शक्तिशाली थे।

-कालेब और यहोशू ने इस्राएलियों को कनान देश देने के परमेश्वर के वादे पर विश्वास किया।

-कालेब और यहोशू ने इस्राएलियों से कहा कि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें और कनान में प्रवेश करें।

-क्या इस्राएलियों ने उन दस पुरुषों की बात मानी जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे, या क्या उन्होंने कालेब और यहोशू की बात मानी जो परमेश्वर पर विश्वास करते थे?

आइए पढ़ें गिनती 14:1-4

1-उस रात समुदाय के सभी लोगों ने आवाज उठाई और जोर-जोर से रोने लगे।

2- सब इस्राएली मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने लगे, और सारी मण्डली ने उन से कहा, यदि हम मिस्र में ही मर जाते! या इस रेगिस्तान में!

3 यहोवा हमें इस देश में क्यों ला रहा है, कि हम तलवार से मारे जाएं? हमारी पत्नियों और बच्चों को लूट लिया जाएगा। क्या हमारे लिए मिस्र वापस जाना अच्छा नहीं होगा?"

4-उन्होंने आपस में कहा, "हमें एक अगुवा चुनकर मिस्र को लौट जाना चाहिए।"

-इस्राएलियों ने उन दस पुरुषों की बात मानी जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे, और कनान देश में प्रवेश नहीं करना चाहते थे।

-कालेब और यहोशू ने एक बार फिर इस्राएलियों से बातें कीं।

आइए पढ़ें गिनती 14:6-9

6 नून के पुत्र यहोशू और यपुन्ने के पुत्र कालेब ने जो देश का भेद लेनेवालों में से थे, अपने वस्त्र फाड़े।

7-और इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहा, जिस देश में से होकर हम चले और उसका भेद लिया, वह बहुत अच्छा है।

8 यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो वह हमें उस देश में ले जाएगा जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, और वह हमें दे देगा।

9-सिर्फ यहोवा से बलवा न करना। और देश के लोगों से मत डर, क्योंकि हम उन्हें निगल जाएंगे। उनकी सुरक्षा दूर हो गई है, लेकिन यहोवा हमारे साथ है। उनसे मत डरो।"

-कालेब और यहोशू ने इस्राएलियों से परमेश्वर की आज्ञा न मानने की विनती की।

-कालेब और यहोशू ने इस्राएलियों से कहा कि परमेश्वर इतना शक्तिशाली है कि कनान के लोगों को पराजित कर सकता है।

-क्या इस्राएली कनान देश में प्रवेश करने के लिए सहमत हुए?

आइए पढ़ें गिनती 14:10

10-किन्तु सारी सभा ने उन पर पथराव करने की बात कही।

-इस्राएली अभी भी कनान में प्रवेश नहीं करना चाहते थे।

-इस्राएली अभी भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करना चाहते थे।

-इस्राएली कालेब, यहोशू और मूसा को पत्थरवाह करना चाहते थे।

-क्या परमेश्वर ने सुना कि इस्राएली क्या कह रहे थे?

-हां।

-क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएली कनान में प्रवेश नहीं करना चाहते थे?

-हां।

-क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएलियों को विश्वास नहीं था कि वह कनान के लोगों को हराने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली था?

-हां।

-क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएलियों ने कनान को उन्हें देने के उसके वादे पर विश्वास नहीं किया?

-हां।

-इस्राएलियों को विश्वास नहीं था कि परमेश्वर उन्हें कनान देने के अपने वादे को पूरा करेगा।

-अगर हम परमेश्वर के संदेश पर विश्वास नहीं करते हैं, तो हम परमेश्वर को क्या कहते हैं?

-एक झूठा।

-इस्राएलियों ने परमेश्वर के संदेश पर विश्वास नहीं किया।

-इस्राएली ईश्वर को झूठा कह रहे थे।

-यहाँ परमेश्वर ने क्या कहा:

आइए पढ़ें गिनती 14:26-32

26-यहोवा ने मूसा और हारून से कहा:

27- “यह दुष्ट समुदाय कब तक मेरे विरुद्ध कुड़कुड़ाएगा? मैंने इन कुड़कुड़ाने वाले इस्राएलियों की शिकायतें सुनी हैं।

28 इसलिथे उन से कहो, यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की सौगन्ध, जो कुछ मैं ने तुझे कहते सुना है, वही मैं तुझ से करूंगा।

29 इस मरुभूमि में तुम्हारे शरीर गिरेंगे, तुम में से हर एक बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र का होगा जो जनगणना में गिना गया था और जो मेरे खिलाफ कुड़कुड़ाया था।

30 यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ तुम में से कोई उस देश में प्रवेश न करेगा, जिसे मैं ने अपके घर बनाने की शपथ खाई थी।

31 जो तेरे लड़केबालोंके विषय में तू ने कहा था, कि वे लूट लिए जाएंगे, मैं उनको उस देश में ले आऊंगा, जिसे तू ने ठुकराया है।

32 लेकिन तुम—तुम्हारी देह इस मरुभूमि में गिरेगी।’”

-क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, केवल कनान में कौन प्रवेश करेगा?

-केवल कालेब, यहोशू और इस्राएलियों की सन्तान।

-क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, परमेश्वर ने उन्हें कैसे दण्ड दिया?

-वे कनान में प्रवेश नहीं करेंगे।

-वे सब मरुभूमि में मरेंगे।

-परमेश्वर हमेशा उन लोगों को मौत की सजा देंगे जो उस पर विश्वास करने से इनकार करते हैं।

-नूह के दिनों के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, और परमेश्वर ने उन्हें मौत की सजा दी।

-सदोम और अमोरा के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, और परमेश्वर ने उन्हें मौत की सजा दी।

-फिरौन और मिस्रियों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, और परमेश्वर ने उन्हें मौत की सजा दी।

-परमेश्वर उन लोगों को अनन्त आग की झील में मौत की सजा देंगे जो उस पर विश्वास करने से इनकार करते हैं।